त्रयोदश माला, खंड 1, अंक 3

शुक्रवार, 22 अक्तूबर, 1999

30 आश्विन, 1921 (शक)

लोक सभा वाद - विवाद

(हिन्दी संस्करण)

पहला सत्र

(तेरहवीं लोक सभा)

PARLIAMENT LIBRARY
No. 3 G
Date 27-6-2000

सत्यमेव जयते

(खण्ड 1 में अंक 1 से 8 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : पचास रुपये

सम्पादक मण्डल

गुरदीप चन्द मलहोत्रा
महासचिव
लोक सभा

डा॰ अशोक कुमार पांडेय
अपर सचिव

हरनाम सिंह
संयुक्त सचिव

प्रकाश चन्द्र भट्ट
मुख्य सम्पादक

केवल कृष्ण
वरिष्ठ सम्पादक

जे॰ एस॰ वत्स
सम्पादक

पीयूष चन्द्र दत्त
सहायक सम्पादक

(अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा।

विषय सूची

[त्रयोदश माला, खंड 1, पहला सत्र, 1999/1921(शक)]

अंक 3, शुक्रवार, 22 अक्तूबर, 1999/30 आश्विन, 1921 (शक)

विषय	कॉलम
सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण	1, 27
अध्यक्ष का निर्वाचन	1-4
अध्यक्ष को बधाइयां	5-27
श्री अटल बिहारी वाजपेयी	5-6
श्रीमती सोनिया गांधी	6-7
श्री सोमनाथ चटर्जी	7-8
श्री के. येरननायडू	8-9
श्री मुलायम सिंह यादव	9-10
कुमारी मायावती	10-11
श्री पी. एच. पांडियन	12-14
श्री इंद्रजीत गुप्त	14-15
श्री शरद पवार	15-16
श्री रघुवंश प्रसाद सिंह	16-17
श्री सनत कुमार मंडल	17-18
श्री चन्द्र शेखर	18-19
श्री जी. एम. बनातवाला	19-20
श्री अली मोहम्मद नायक	21
श्री अमर राय प्रधान	21-22
श्री पी. सी. थामस	22-23
श्री के. फ्रांसिस जार्ज	23-24
अध्यक्ष महोदय	24-27
मंत्रियों का परिचय	27-28

लोक सभा

शुक्रवार, 22 अक्तूबर, 1999/30 आश्विन, 1921 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न 11 बजे समवेत हुई

[सामयिक अध्यक्ष महोदय (श्री इन्द्रजीत गुप्त) पीठासीन हुए.]

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण

अध्यक्ष महोदय : महासचिव उन माननीय सदस्यों का नाम पुकारेंगे जिन्होंने अभी शपथ नहीं ली है या प्रतिज्ञान नहीं किया है।

श्री राजेन्द्र सिंह राणा (भावनगर)

श्री बासनगौड़ा रामनगौड़ा पाटिल (बीजापुर)

श्री गजेन्द्र सिंह राजूखेड़ी (धार)

श्री प्रकाश यशवंत अम्बेडकर (अकोला)

श्री प्रभात कुमार सामन्तराय (केन्द्रपाड़ा)

श्रीमती शीला गौतम (अलीगढ़)

पूर्वाह्न 11.07 बजे

अध्यक्ष का निर्वाचन

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब मैं श्री अटल बिहारी वाजपेयी को अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए बुलाता हूं।

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : माननीय अध्यक्ष जी, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री जी.एम.सी. बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

[अनुवाद]

श्रीमती सोनिया गांधी (अमेठी) : महोदय, मैं माननीय प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रस्ताव का समर्थन करती हूं।

गृह मंत्री (श्री लाल कृष्ण आडवाणी) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री जी.एम.सी. बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

[हिन्दी]

रक्षा मंत्री (श्री जॉर्ज फर्नान्डीज) : अध्यक्ष जी, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हू।

[अनुवाद]

वाणिज्य और उद्योग मंत्री (श्री मुरासोली मारन) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री जी. एम. सी. बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री एस. एस. पलानीमनिक्कम (तंजावूर) : महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री के. येरननायडू (श्रीकाकुलम) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री. जी.एम.सी. बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

अध्यक्ष महोदय : श्री के. ई. कृष्णमूर्ति।

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री जी. एम. सी. बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री एन. एन. कृष्णदास (पालघाट) : महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री शरद पवार (बारामती) : महादेय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री जी. एम. सी. बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

श्री श्रीनिवास पाटील (मरूलकर) (कराड) : महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : (सम्भल) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री जी. एम. सी. बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री बेनी प्रसाद वर्मा (केसरगंज) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

कुमारी मायावती (अकबरपुर) : महोदय, मैं प्रस्ताव करती हूं:

"कि श्री जी. एम. सी. बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री राशिद अलवी (अमरोहा) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

[अनुवाद]

खान और खनिज मंत्री (श्री नवीन पटनायक) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री जी. एम. सी. बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री प्रसन्न आचार्य (सम्बलपुर) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री वैको (शिवकाशी) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री जी. एम. सी. बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

अपारम्परिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री एम. कन्नप्पन) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : अब मैं स्वयं, श्री इंद्रजीत गुप्त मैं सामयिक अध्यक्ष की हैसियत से नहीं अपितु सभा के सदस्य के रूप में प्रस्ताव करता हूं:

मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री जी. एम. सी. बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्रीमती गीता मुखर्जी (पंसकुरा) : महोदय, मैं इस विश्वास के साथ कि वे महिला आरक्षण विधेयक को पारित कराने में सहयोग करेंगे, इस प्रस्ताव का समर्थन करती हूं...*(व्यवधान)*

प्रो. ए. के. प्रेमाजम (बडागरा) : श्रीमती गीता मुखर्जी ने जो कहा उसका मैं पूर्ण समर्थन करती हूं।

रेल मंत्री (कुमारी ममता बनर्जी) : महोदय, श्रीमती गीता मुखर्जी ने जो कहा उसका मैं समर्थन करती हूं। मैं श्रीमती गीता मुखर्जी का पूर्ण समर्थन करती हूं और आशा करती हूं कि निर्वाचित होने वाले अध्यक्ष सभा में हमें पूर्ण लोकतांत्रिक शक्ति प्रदान करेंगे। आपका बहुत–बहुत धन्यवाद...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : इस समय आप केवल प्रस्ताव प्रस्तुत कीजिए।

...(व्यवधान)

कुमारी ममता बनर्जी : ठीक है, मैं प्रस्ताव करती हूं। महोदय, मैं प्रस्ताव करती हूं :

"कि श्री जी. एम. सी. बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अजित कुमार पांजा) : हमारी नेता कुमारी ममता बनर्जी द्वारा महिलाओं के समर्थन में कहे गए अतिरिक्त शब्दों सहित प्रस्तुत किए गए प्रस्ताव का मैं समर्थन करता हूं।

[हिन्दी]

रसायन और उर्वरक मंत्री (श्री सुरेश प्रभु) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री जी. एम. सी. बालयोगी जो इस सभा के सदस्य हैं को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्री (श्री मनोहर जोशी) : महोदय, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

श्री पी. एच. पांडियन (तिरूनेलवेली) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री जी. एम. सी. बालयोगी जो इस सभा के सदस्य हैं को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

श्री के. मलयसामी (रामनाथपुरम) : महोदय, श्री पी. एच. पाण्डियन द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रस्ताव का मैं समर्थन करता हूं।।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री एन. टी. वणमुणम) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री जी. एम. सी. बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री ई. पोन्नुस्वामी) :

"महोदय मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, सभा पटल पर रखे गए प्रस्तावों को प्रस्तुत किया गया और उनका समर्थन किया गया। श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रस्तुत और श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा समर्थित प्रस्ताव सभा के समक्ष विचारार्थ हैं और मैं इस प्रस्ताव को सभा में मतदान के लिए रखूँगा।

प्रश्न यह है :

"कि श्री जी. एम. सी. बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। मैं घोषणा करता हूं कि श्री जी. एम. सी. बालयोगी को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाता है।

सदन के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी और विपक्ष की नेता श्रीमती सोनिया गांधी श्री जी. एम. सी. बालयोगी को अध्यक्ष पीठ तक ले गए।

पूर्वाह्न 11.17 बजे

(अध्यक्ष महोदय (श्री जी. एम. सी. बालयोगी) *पीठासीन हुए।)*

पूर्वाह्न 11.18 बजे

अध्यक्ष को बधाइयाँ

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी।

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, आज का दिन संसद के इतिहास में एक स्मरणीय दिन के रूप में रहेगा। लोक सभा के अध्यक्ष का निर्वाचन अपने में एक महत्वपूर्ण घटना है। चुनाव के बाद जब हम एकत्र होते हैं और सदन की कार्यवाही को चलाने का निश्चय करते हैं तो अध्यक्ष पद के लिए निर्वाचन हमारी कार्यसूची में शामिल रहता है। लेकिन इस बार का चुनाव इसलिए उल्लेखनीय बन गया है कि अध्यक्ष महोदय अब आप दूसरी बार अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। सभी को यह अवसर नहीं मिलता। लेकिन इससे भी प्रसन्नता की और गौरव की बात यह है कि आप सर्वसम्मति से सदन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। आज सारा सदन एक स्वर में आपके अध्यक्ष पद को अलंकृत करने का स्वागत कर रहा है। पिछली बार जब आप चुने गये थे तो निर्विरोध चुने गये थे। लेकिन आज जो सदन में वातावरण है वह पिछली बार नहीं था।

लोकतंत्र परम्पराओं पर चलता है। निष्प्राण नियम, निर्जीव निर्देश अपना महत्व रखते हैं, लेकिन जब तक उनमें परस्पर सहयोग और सद्भाव के प्राण न फूंके जाएं, तब तक लोकतंत्र एक ढांचा मात्र रहता है। बीच में यह परम्परा चली थी कि सत्ता पक्ष का अध्यक्ष हो और जो प्रमुख प्रतिपक्ष है, उसका उपाध्यक्ष हो। आज उस परम्परा में फिर से प्राण डाले जा रहे हैं जिससे मुझे बड़ी खुशी है। मैं आने वाले किसी निर्णय की सूचना नहीं दे रहा हूं। यह परम्परा चले, यह परम्परा आगे बढ़े, जो लोकतंत्र के लिए शुभ होगा, लोक तंत्र के लिए स्वस्थकर होगा।

चुनाव की गर्मा–गर्मी के बाद हम आपके नेतृत्व में काम करेंगे। आप सदन के लिए नए नहीं हैं, नए सदस्यों के लिए भले ही नए हों। आपका सारा जीवन सार्वजनिक कार्यों से जुड़ा हुआ रहा है। पंचायत से लेकर पार्लियामेंट तक सभी जनप्रतिनिधि संस्थाओं का आपको अनुभव है। आन्ध्र प्रदेश के एक छोटे से गांव में एक गरीब परिवार में दलित के घर जन्म लेकर आज आप जिस ऊंचे आसन पर विराजमान हैं, वह आपके गुणों को तो उजागर करता ही है, मगर देश का गौरव भी बढ़ाता है।

भारत संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। इस बार चुनाव से पहले ये आशंकाएं प्रकट की गई थीं कि लोग प्रति वर्ष होने वाले चुनावों से इतना ऊब गए हैं कि वे मतदान में भाग नहीं लेंगे, उदासीन रहेंगे, लेकिन भारत के मतदाता ने, जागरूक मतदाता ने इसे गलत साबित कर दिया। मौसम की खराबी के बावजूद बड़ी संख्या में लोग अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिए आए। सभी मतदाताओं को शिक्षित होने का अवसर नहीं मिला है, हम उन्हें अवसर नहीं दे सके हैं, अन्य अभाव भी हैं, लेकिन भारतीय गणतंत्र के मतदाता, एक मतदाता के नाते, अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक हैं और मताधिकार का महत्व पहचानते हैं। जहां मताधिकार को बहिष्कृत करने का आह्वान किया गया था वहां भी मतदाताओं ने बहिष्कार का साथ नहीं दिया। उन्होंने लोकतंत्र को सबल बनाने में अपना योगदान दिया। भारत का मतदाता भी इसके लिए हमारी बधाई का पात्र है।

अध्यक्ष महोदय, आप सदन को पहले चला चुके हैं। आज फिर आप पर बड़ी जिम्मेदारी आ रही है। मुझे विश्वास है कि आपके निर्देशन में यह सदन अपने दायित्व का पालन करेगा। लोकतंत्र सहयोग और समन्वय की मांग करता है। मतभेदों को प्रखर तरीके से प्रस्तुत करना, लेकिन सदन की मर्यादा का हमेशा ध्यान रखना, यह बहुत आवश्यक है और यह बात मैं इसलिए नहीं कह रहा हूं कि मैं इस समय इधर खड़ा हूं या बैठा हूं। जब मैं प्रतिपक्ष में था तब भी इस बात पर बल देता था कि संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र की ओर दुनिया बड़े ध्यान से देख रही है। जो देश नये–नये स्वाधीन हुए हैं और जिन्होंने लोकतंत्र के पथ पर पग बढ़ाये हैं, वे हमारे प्रयोग को देखकर आश्चर्यचकित होते हैं, प्रसन्न भी होते हैं। हमें उनकी आशाओं को टूटने नहीं देना है। देश के भीतर भी इस सदन को एक उदाहरण उपस्थित करना है, जिसका अन्य जनतांत्रिक संस्थायें पालन कर सकें।

आज जब अपने पड़ोस में लोकतंत्र पर हुए आघात से हम सब चिन्तित हैं, वहीं उससे हमें अपने संकल्प को बलशाली बनाने की भी प्रेरणा मिलती है कि हम लोकतंत्र की पूरी तरह से रक्षा करेंगे, उसका विकास करेंगे, उसे सार्थक बनायेंगे और उसे माध्यम बनाकर देश में आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन लायेंगे।

अध्यक्ष महोदय, आपकी देख–रेख में यह काम सदन सम्पूर्ण करेगा, इसका मुझे पूरा विश्वास है। मैं एक बार फिर आपको अपनी ओर से और पूरे सदन की ओर से बधाई देता हूं।

[अनुवाद]

श्रीमती सोनिया गांधी (अमेठी) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके लोक सभा अध्यक्ष जैसे उच्च पद पर सर्वसम्मति से निर्वाचित होने पर मुझे बहुत खुशी हुई है। मैं इसके लिए कांग्रेस पार्टी की तरफ से और अपनी ओर से आपको बधाई देती हूं तथा आपका अभिनन्दन करती हूं।

महोदय, आपके लिए वर्तमान कार्य नया नहीं है क्योंकि आप बारहवीं लोक सभा की भी अध्यक्षता कर चुके हैं। वर्ष 1998 में इस उच्च पद पर आसीन होते ही थोड़े ही समय में आपने नियमों और परम्पराओं की सम्यक जानकारी हासिल की और सदन के सभी वर्गों के साथ निष्पक्ष बर्ताव किया।

जिस प्रकार माननीय अध्यक्ष सदन की परम्पराओं के अभिरक्षक हैं उसी प्रकार हम सबका कर्तव्य है कि हम वाद–विवाद में मर्यादा

[श्रीमती सोनिया गांधी]

का ध्यान रखें और लाभप्रद चर्चा करें। यह सदन इतिहास और अनेक भारतीयों को मुखरित करता है। अनेक पुरूषों और महिलाओं ने आज के गंभीर मुद्दों पर विस्तार से तथा धैर्यपूर्वक अपने विचार व्यक्त किए हैं।

आज हम एक नए सत्र में प्रवेश कर रहे हैं जो हमें एक नई सहस्राब्दी की ओर ले जाएगा। हम जो भी विचार–विमर्श कर रहे हैं उसे बडी संख्या में हमारे लोग देख रहे हैं। इसलिए यह जरूरी है कि हम संसदीय शिष्टाचार और भाषा की उच्च परम्पराओं का पालन करें। इस सदन में, हम कांग्रेस पार्टी के सभी सदस्य सदैव इस बात पर अमल करने का प्रयास करेंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आप लोक सभा के अधिकारों और विशेषाधिकारों के रक्षक हैं। हम अपनी ओर से आपको पूरा सहयोग करेंगे और हम आपके नेतृत्व में कार्य करेंगे।

मैं इस सभा के सभी सदस्यों को भी उनको चुने जाने पर बधाई देती हूं।

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : अध्यक्ष महोदय मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से आप द्वारा अध्यक्ष पद पुनः ग्रहण करने पर आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं तथा बधाई और अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

महोदय, मुझे विश्वास है कि अमलापुरम के लोग आज बहुत खुश हैं और गर्व महसूस कर रहे हैं। आज आपका सर्वसम्मति से चुनाव न केवल वर्तमान सभा के गठन को दर्शाता है बल्कि बारहवीं लोक सभा के दौरान पीठासीन अधिकारी के रूप में आपके छोटे से कार्यकाल के दौरान आपको प्राप्त सम्मान और विश्वास को भी प्रतिबिंबित करता है पिछली बार, इसके संबंध में कुछ संदेह थे क्योंकि इस मुद्दे का निपटान करने वाले प्रभारियों का तरीका अनुभवहीन और अव्यावसायिक था परंतु जल्दी ही इनका आपकी समर्थता और सीखने की क्षमता, दृढतापूर्वक आपके द्वारा किया गया निपटान, आपकी तुलनात्मक क्षमता, प्रजातांत्रिक सिद्धांतों के प्रति आपकी वचनबद्धता और इस सदन की उच्चतम परंपराओं को बनाए रखने की आपकी इच्छा के कारण निवारण कर दिया गया। महोदय आपने अपनी क्षमताएं साबित कर दी हैं और हम आपकी सफलता की कामना करते हैं।

यह कहना सही है कि यह सदन सभी का है। इसके अलावा यह विपक्ष का है जो लोगों की इच्छाओं और आकांक्षाओं तथा सरकार के काम काज पर निगरानी रखता है। मुझे इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि आप इस सभा की गरिमा और सम्मान बनाए रखेंगे तथा सदस्यों को बोलने का पूरा अवसर देंगे, विशेषकर, उन्हें जो आगे के स्थानों पर उपस्थित नहीं हैं। मुझे आशा है कि आप उन्हें इस सभा के काम काज में भाग लेने का पूरा अवसर देंगे। परंतु मुझे आशंका है कि यह इस सदन की कार्रवाई को चलाने का अच्छा तरीका नहीं है। यह रोज का काम नहीं हो सकता। ऐसे असाधारण सम्मिश्रण से, जो एक गठबंधन बनने वाला है, आपको विपक्ष की अपेक्षा सत्ता पक्ष से अधिक समस्या आ सकती है। अब राम मंदिर का मामला दब गया है। परंतु रामकृष्ण जी मंत्रिमंडल में न लिए जाने के कारण नाराज हैं। चौटाला के दल के किसी सदस्य को मंत्रिमण्डल में नहीं लिया गया है। प्रभुनाथ और जयनारायण जी भी मंत्रिमण्डल में लिए जाने के लिए इंतजार में हैं। इसलिए यहां समस्या खड़ी हो सकती है। परंतु महोदय जहां तक मेरे दल का संबंध है हम आपको आश्वासन देते हैं कि आपको पूरा सहयोग और समर्थन देंगे।

मुझे पूरा विश्वास है कि आप इस सदन की गरिमा और सम्मान बनाए रखेंगे। इस सदन में पिछली बार की तरह छोटे वक्ता नहीं होने चाहिए।

महोदय, हम आपको शुभकामनाएं देते हैं। हम अपने दल की तरफ से आपके महत्वपूर्ण कार्यों के निपटान के लिए आपका पूरा सहयोग करने के लिए वचनबद्ध हैं।

श्री के. येरननायडू (श्री काकुलम) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आंध्र प्रदेश, के लोगों, तेलुगु देशम संसदीय पार्टी और अपनी ओर से माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री जी. एम. सी. बालयोगी के इस उच्च पद पर पुनः निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई देता हूं। मैं इस अपूर्व सम्मान के पद पर उनके सर्वसम्मति से चुने जाने पर उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। गठबंधन की राजनीति के इस युग में एकमत से चुनाव होना सर्वसम्मति की भावना को दर्शाता है। मैं सभी राजनैतिक दलों के नेताओं का धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने श्री जी. एम. सी. बालयोगी को अध्यक्ष पद के उम्मीदवार के रूप में समर्थन दिया।

मेरा दल संघवाद का प्रबल समर्थक रहा है। तेलुगु देशम पार्टी से संबद्ध श्री जी. एम. सी. बालयोगी का सर्वसम्मति से इस सदन के अध्यक्ष के रूप में चुना जाना हमारी राजनीतिक प्रणाली में गहरी जड़े जमाता संघवाद का प्रतीक है। तेलुगु देशम क्षेत्रीय पार्टी के लिए उनका इस सम्माननीय सभा का अध्यक्ष चुना जाना संतोष और प्रसन्नता की बात है।

मेरा श्री बालयोगी के साथ विश्वविद्यालय के दिनों से अब तक लंबा साथ रहा है। हमने विधि की पढ़ाई एक साथ की थी। हमने राजनीति में भी एक साथ प्रवेश किया । वे एक छोटे से गांव के रहने वाले हैं और कमजोर वर्ग से संबंधित हैं। उनका चयन पहले दर्जे के मजिस्ट्रेट के रूप में हुआ था। छह महीने बाद उन्होंने मजिस्ट्रेट के पद से इस्तीफा दे दिया और राजनीति में प्रवेश किया। शुरू में माननीय अध्यक्ष महोदय पूर्वी गोदावरी जिले में जिला परिषद के चेयरमैन के रूप में निर्वाचित हुए थे। उसके बाद, वे आंध्र प्रदेश सरकार में शिक्षा मंत्री रहे। उन्होंने पिछड़े क्षेत्रों के लिए, विशेषकर पूर्वी गोदावरी जिले के मछुआरा समुदाय के लिए बहुत काम किया। मैं श्री बालयोगी को मानवीय मूल्यों में अटूट आस्था और प्रतिबद्धता के लिए जानता हूं। वे एक अतिसंवेदनशील व्यक्ति हैं और गरीबों के लिए, कमजोर वर्गों के लिए तथा असहाय

लोगों के लिए उनके मन में विशेष स्थान है। इस सभा के वरिष्ठ सांसदों से मेरा अनुरोध है कि वे नव–निर्वाचित संसद सदस्यों को संसदीय मान मर्यादा से अवगत कराएंगे। इस संबंध में माननीय सदस्य उनसे उचित मार्गदर्शन की अपेक्षा करते हैं।

मैं इस पवित्र सदन के मूल्यवान समय से अधिक समय नहीं लेना चाहता। अपने दल की ओर से मैं माननीय अध्यक्ष महोदय को पूरा सहयोग करने का आश्वासन देता हूं। मैं उनके कार्य में उनकी पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल) : अध्यक्ष महोदय, आपके अध्यक्ष चुने जाने पर हम आपका स्वागत करते हैं और खुशी भी जाहिर करते हैं। आप पहले भी इस पद पर रह चुके हैं। उस समय भले ही आप नए थे, लेकिन अपनी योग्यता और क्षमता का अच्छा और निष्पक्ष प्रदर्शन आपने कई परिस्थितियों में किया और सदन की गरिमा को बनाए रखा। पहले आप बहुमत से चुने गए थे, अबकी बार सर्वसम्मति से चुने गए हैं, यह बहुत खुशी की बात है। जहां हम सबकी जिम्मेदारी है और आपकी जिम्मेदारी भी बढ़ी है, वहीं हम आपसे उम्मीद करते हैं कि आप विपक्ष के माननीय सदस्यों के अधिकारों का संरक्षण करते रहेंगे। बहुमत की सरकार कई बार बहुमत के बल पर ऐसे काम करती है जो जन विरोधी होते हैं। विपक्ष के लिए जरूरी है कि उसका विरोध किया जाए और केवल विरोध ही उत्तरदायित्व नहीं, बल्कि विपक्ष का संघर्ष भी करना उत्तरदायित्व है। इससे कई बार ऐसी परिस्थिति में सरकार कहती है कि लोकतंत्र खत्म हो गया है। अगर सही बात कहने के लिए विपक्ष विरोध करता है तो यह प्रचार किया गया है, इसी सरकार ने सारे देश में भी यह प्रचार किया कि हिन्दुस्तान का लोकतंत्र खत्म कर दिया गया और यहां तक कहा कि लोकतंत्र को मुट्ठीभर लोगों ने खत्म कर दिया, इस पर कृपया आपको ध्यान देने की आवश्यकता है। हम आपका अपने दल की तरफ से, समाजवादी पार्टी की तरफ से पूरा सहयोग करेंगे। हम ऐसा महसूस करते हैं और चटर्जी साहब ने भी कहा है कि जो निर्दलीय हैं, छोटे–छोटे दल हैं उनका भी सदन के अंदर विशेष ध्यान रखा जाए। सदन के नये सदस्यों को भी बोलने का मौका मिले, इससे लोकतंत्र की जडें मजबूत होंगी। हमें विश्वास है कि आप विपक्ष के अधिकारों को संरक्षण तो देंगे ही, लेकिन बहुत से ऐसे काम हैं जो सरकार की इच्छा के प्रतिकूल हो सकते हैं, सरकार की नीयत भी खराब हो सकती है, उस नीयत का विरोध करना हमारा फर्ज और हमारी जिम्मेदारी है। हम जहां से चुन कर आए हैं, देश की जनता के प्रति हमारी जिम्मेदारी है। ऐसे कटु निर्णयों का तो हम विरोध करेंगे ही, उस कटु विरोध में कुछ बातें ऐसी आ जाती हैं जिनसे घबराने की जरूरत नहीं है। हम संसदीय काम पूरी तरह से करेंगे लेकिन अगर कोई बहुमत के बल पर मनमानी करेगा तो उसे रोकना भी हमारा उत्तरदायित्व है, उसे भी हम पूरा करेंगे।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपको समाजवादी पार्टी की तरफ से पूरा समर्थन और सहयोग मिलेगा। हमें विश्वास है कि जिस तरीके की सरकार बनी है वह सरकार कुछ ऐसे कानून लाने वाली है जिन पर टकराव होगा। यह सरकार उन कानूनों को हर तरह से पेश करने की कोशिश करेगी और हम भी हर तरह से उसे पेश करने से रोकने का काम करेंगे, यह हमारी जिम्मेदारी है। इसे आप अन्यथा नहीं लेंगे, हमें माफ करेंगे....*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : नोटिस दे दिया है।

श्री मुलायम सिंह यादव : हां, नोटिस देंगे। आप जिस परिवार से छोटे गांव से आए हैं, सरकार का इस तरह प्रचार करना कि लोकतंत्र खतरे में पड़ गया है इसका आपको कटु अनुभव भी है। पिछले अनुभवों के आधार पर हम लोग कभी–कभी इन बातों की अनदेखी भी करेंगे, सहयोग भी करेंगे और फिर आपसे कृपापूर्वक आग्रह करेंगे, आप भले ही नाराज हो जाएं लेकिन आपकी निगाहें फिर भी हमारी तरफ बनी रहें, ऐसी हम आपसे उम्मीद करते हैं। आपकी योग्यता में कोई शक नहीं है। आप दोबारा चुने गए हैं, इसकी हमें खुशी है। प्रधानमंत्री जी ने जो कहा है, यह एक ऐतिहासिक दिन है, आपका सौभाग्य है और हमारे लिए भी सौभाग्य की बात है कि हमारे मिलने–जुलने वालों को हर तरह से आपसे बात करने का मौका मिलता रहे। आप फिर से उस उच्च पद पर पदासीन हुए हैं, इस सदन की गरिमा हम लोग भी पूरी तरह से निभाएंगे लेकिन सबसे ज्यादा जिम्मेदारी सत्ता पक्ष की है, यह आप ध्यान रखेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपका स्वागत और अभिनंदन करता हूं।

कुमारी मायावती (अकबरपुर) : माननीय अध्यक्ष जी, इस सभा के अध्यक्ष पद पर आपकी सर्वसम्मति नियुक्ति हुई है, इसके लिए मैं स्वयं और अपनी पार्टी की ओर से आपका स्वागत करती हूं। मुझ से पूर्व जिन नेताओं ने आपकी नियुक्ति पर अपने विचार रखे हैं, उनसे अपनी सहमति जताते हुए मैं आपसे यह अपील करूंगी कि आपकी जिस तरह सर्वसम्मति और निर्विरोध नियुक्ति हुई है उससे हमें खुशी है और आज उस समाज को भी खुशी होगी, जिस समाज से आप ताल्लुक रखते हैं। ऐसा समाज जिसे इस देश में मनुवादी व्यवस्था के द्वारा जिंदगी के हर पहलू में गिराया गया है और पछाड़ा गया है...*(व्यवधान)* आप मेरी बात सुन लीजिए...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : प्लीज, आप बीच में मत बोलिये।

कुमारी मायावती : आपको मेरी बात जरूर कड़वी लगे, लेकिन जिस मनुवादी व्यवस्था के द्वारा इस देश के करोडों दलित–शोषित समाज के लोगों को गिराया गया है, पछाड़ा गया है, यह किसी से छिपा नहीं है।...*(व्यवधान)* जिस समाज से आप ताल्लुक रखते हैं, मैं उम्मीद करती हूं कि इस महत्वपूर्ण कुर्सी पर बैठकर आप उनके हितों का पूरा ध्यान रखेंगे। आपको मालूम ही है कि परम पूज्य बाबा साहेब अम्बेडकर जी के अथक प्रयासों के कारण इस देश के करोडों दलित–शोषित लोगों को आगे बढने के

[कुमारी मायावती]

लिए जिंदगी के हर क्षेत्र में आरक्षण मिला है। खास तौर से नौकरियों में जो आरक्षण मिला है, किसी भी पार्टी की सरकार ने, उस आरक्षण के कोटे को पूरा नहीं किया है। इतना ही नहीं आज तो सुप्रीम कोर्ट और उससे निचली अदालतें भी उसमें दखल देती नजर आ रही हैं। आप माननीय प्रधान मंत्री जी से मिलकर दलित–शोषित समाज का आरक्षित कोटा जो पूरा नहीं हुआ है उसे पूरा कराने में दिलचस्पी लेंगे। ...*(व्यवधान)* साथ ही आप ऐसा कानून बनाने में भी दिलाचस्पी लेंगे जिससे कोई भी अदालत, निचली अदालत हो या सुप्रीम कोर्ट हो, जो आरक्षण अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों को मिला है उसमें दखलंदाजी न दे सके।...*(व्यवधान)*

इसके साथ–साथ जब महिलाओं के आरक्षण के बिल के ऊपर चर्चा होती है तो उस मौके पर भी हम महिलाओं के आरक्षण के बिल के खिलाफ नहीं, लेकिन महिला आरक्षण बिल में अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछडे वर्ग की अकलियत समाज की महिलाओं के लिए भी उसमें आरक्षण की व्यवस्था हो, इसकी तरफ भी आप पूरा ध्यान रखेंगे। महिलाओं के बिल की जब बात आती है और उस पर चर्चा होती है तो अनुसूचित जाति और जनजाति की महिलाओं को यह कहा जाता है कि महिला आरक्षण बिल में तो अनुसूचित जाति और जनजाति के आरक्षण की अपने आप में व्यवस्था है। मैं आपको बताना चाहती हूं कि यह व्यवस्था जरूर है लेकिन जो कोटा लोक सभा और विधान सभा में अनुसूचित जाति और जनजाति के लिए रिजर्व किया गया है अगर उसमें 33 प्रतिशत महिलाओं को दे दिया जाएगा तो आप खुद सोचें कि जो हमारे पुरुष भाई हैं उनका इतना कोटा आटोमेटिकली कम हो जाएगा, लगभग आधा रह जाएगा। इसलिए मैं नहीं चाहती कि हमारा जो कोटा है उसमें से महिलाओं को एडजस्ट किया जाए। इसके फेवर में मैं नहीं हूं। जो हमारा कोटा है वह तो हमें मिलना चाहिए और महिला आरक्षण बिल में जो अनुसूचित जाति, जनजाति और अकलियत समाज की महिलाओं के लिए अलग से व्यवस्था हो। इसकी तरफ भी आप पूरा ध्यान देंगे।

अंत में मैं आपका ज्यादा समय न लेते हुए पुनः आपसे दरख्वास्त करूंगी कि जब भी हाउस में दलित शोषित समाज की बात आये तो आप उस पर पूरा समय देंगे। खास तौर पर वीकर सैक्शन से संबंध रखने वाले संसद सदस्यों की बात को सुनेंगे। आप उनकी दुख तकलीफों में अहम भूमिका निभाते हुए माननीय प्रधान मंत्री जी से भी प्रार्थना करेंगे कि उनके हितों की अनदेखी न हो।

इन्हीं शब्दों के साथ और ज्यादा समय न लेते हुए यह कहना चाहती हूं कि आज मुझे इस बात का काफी गर्व अनुभव हो रहा है कि हमारे दलित शोषित समाज से संबंध रखने वाले भाई की इस महत्वपूर्ण कुर्सी के लिए निर्विरोध नियुक्ति हुई है। इसके लिए बहुजन समाज पार्टी फिर से वैलकम करती है।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब श्री पी. एच. पाण्डियन जी।

...(व्यवधान)

[हिन्दी]

कुमारी मायावती : मनुवादी व्यवस्था से देश के कमजोर तबके के लोग और अधिक पिछड़े हो गए हैं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : महोदया, कृपया बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : यह कार्रवाई वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जा रहा है।

*...(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री रामदास आठवले (पंढरपुर) : इन्हें मनु का नाम लेने वालों पर बहुत गुस्सा आता है।.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैंने आपका नाम नहीं लिया है। कृपया बैठ जाइए। अब श्री पी. एच. पाण्डियन जी।

श्री पी. एच. पांडियन (तिरूनेलवेली) : माननीय अध्यक्ष महोदय, अखिल भारतीय अन्ना द्रमुक संसदीय दल की ओर से और अपनी ओर से हम आपको हार्दिक बधाई देते हैं और 13वीं लोक सभा के अध्यक्ष के पद पर सर्वसम्मति से चुने जाने पर आपका स्वागत करते हैं।

मैंने अभी देखा कि विपक्ष के नेता और प्रधान मंत्री आपको अध्यक्ष कुर्सी पर विराजमान करने के लिए अध्यक्षपीठ तक ले गए। मैं अध्यक्ष पद के इतिहास को 17वीं सदी तक ले जाना चाहता हूं, यह कैसे हुआ और आपको अध्यक्ष पीठ तक क्यों ले जाया गया। राजा चार्ल्स के शासन के दौरान सभा के अध्यक्षों को बहुत यातना सहनी पड़ी, कोई भी इस पद को स्वीकार करने के लिए आगे नहीं आया। इसीलिए अध्यक्ष चुने जाने के बाद उसे विपक्ष के नेता और प्रधान मंत्री द्वारा अध्यक्षपीठ तक ले जाया जाता है।

महोदय, आपको दूसरी बार अध्यक्षपीठ तक सादर ले जाया गया है। राजा चार्ल्स के शासन के दौरान स्पीकर लेंथाल ने हाउस ऑफ कामन्स में सर्वोच्च परम्पराओं व अध्यक्ष पद की स्वतंत्रता को प्रतिष्ठित किया । एक बार राजा चार्ल्स ने संसद में प्रवेश किया और स्पीकर लेंथाल से कहा कि पांच सांसदों को उनके समक्ष पेश किया जाये ताकि उनसे निपटा जाए। स्पीकर लेंथाल ने कहा, "मेरे पास न देखने के लिए आंखे हैं और न सुनने के लिए कान"

* कार्य–वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।

इसीलिए पूर्वोदाहरण अनुसरण में अब अध्यक्ष पद गरिमामयी स्थिति में है। ब्रिटिश शासन के दौरान हाउस ऑफ कामन्स में हर कोई फांसी से बचने के लिए मंत्री बनना चाहता था न कि अध्यक्ष। राजा को सूचना न देने के लिए दो अध्यक्षों को फांसी दी गयी थी। जब मैं हाउस आफ कामन्स देखने गया तो मैंने उन दो स्पीकरों के फोटो देखे जिन्हें फांसी दी गई थी। अतः इस पद का इतिहास 17वीं सदी से शुरू होता है और अब हम 21वीं सदी की ओर बढ़ रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आप हमारे संविधान के सर्वोच्च पद पर सुशोभित है। महोदय, कार्यपालिका पर आपका संसदीय नियंत्रण है। ...*(व्यवधान)*

श्री एस. बंगारप्पा (शिमोगा) : हाउस आफ कॉमन ने एक राजा को भी प्राणदंड दिया था...*(व्यवधान)*

श्री पी. एच. पांडियन : हां वह राजा चार्ल्स था।

अध्यक्ष महोदय आप कार्यपालिका पर नियंत्रण करने के लिए अपनी संवैधानिक शक्ति का प्रयोग करेंगे यही संसदीय कार्यपालिका है।

अध्यक्ष महोदय, हालिया चुनावों के बाद राजनीतिक समीकरणों और गठबंधन के तालमेल के संदर्भ में आपको महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी है। भाजपा इस घालमेल में अकेली सबसे बड़ी पार्टी है जो सरकार का नेतृत्व कर रही है। इसलिए मेरा कहना है कि अध्यक्ष के माध्यम से संसद सरकार जो भी निर्णय ले, उस पर अंकुश रखेगी। यह सामूहिक निर्णय हो सकता है किंतु यह विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं, विभिन्न राजनीतिक दलों और क्षेत्रीय पार्टियों, जो मंत्रिमंडल में शामिल हैं का विचित्र मिश्रण है।

महोदय, इस अवसर पर मैं एक बात कहना चाहता हूं कि एक अध्यक्ष के नाते आपके पास संसद में पेश किए जाने वाले किसी भी विधेयक की सांवैधानिकता का निर्णय करने की सांवैधानिक शक्ति है, यदि आप कहते हैं कि यह असंवैधानिक है तो उसे सदन में चर्चा या वाद–विवाद के लिए नहीं रखा जा सकता है। इसके अलावा दल–बदल रोधी कानून के अंतर्गत सांवैधानिक प्रश्न का निर्णय करने की शक्ति संविधान की दसवीं अनुसूची के अधीन अध्यक्ष को प्रदान की गई है। यही नहीं उस अनुसूची के अधीन आपको स्वतंत्रता पूर्वक कार्यनिष्पादन करने के लिए न्यायिक शक्तियां दी गई हैं। उसके अलावा प्रक्रिया के नियमों के अधीन आपको पुलिस मार्शल शक्तियां दी गई हैं। एक क्षेत्रीय दल के सदस्य के रूप में आपको अध्यक्ष पद पर आसीन किया गया है अतः मै आपसे आग्रह करता हूं कि स्कैंडिनेवियाई देशों की तरह अध्यक्ष का सरकार पर संसदीय नियंत्रण होगा। अल्पमत सरकार पिछले 17 साल से चल रही थी। 1986 तक मैं डेनमार्क में था। अध्यक्ष को प्रधानमंत्री के नाम की स्वीकृति देनी होती है। यदि अध्यक्ष 'अस्वीकृत' कर देता है तो प्रधान मंत्री के नाम का प्रस्ताव संवैधानिक रूप से सदन में पेश नहीं किया जा सकता है।

महोदय, वर्तमान संदर्भ में अध्यक्ष के रूप में आपको संवैधानिक कर्तव्यों का निर्वहन करना है और संवैधानिक शक्तियों का प्रयोग करना है। इस संदर्भ में मैं मावलंकर के अध्यक्ष चुने जाने पर पंडित नेहरू द्वारा कही गयी बात को उद्धत करता हूं, उन्होंने कहा "अध्यक्ष सभा का प्रतिनिधित्व करता है; सभा राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है और अध्यक्ष पद के लिए निष्पक्ष व स्वतंत्र विचारों वाला व्यक्ति का निर्वाचन किया जाता है।" अध्यक्ष महोदय, मुझे आशा है कि आप इस सभा में उस परंपरा–विचारों की स्वतंत्रण, कार्यों की स्वतंत्रता, कार्य संचालन की स्वतंत्रता–को बनाए रखेंगे।

अखिल भारतीय अन्नाद्रमुक पार्टी की ओर से हम आपको आश्वासन देते हैं कि हम आपको पूर्ण सहयोग देंगे और हम आपको बधाई देते हैं।

अध्यक्ष महोदय : अब सभा के वरिष्ठतम सदस्य श्री इन्द्रजीत गुप्त बोलेंगे।

श्री इन्द्रजीत गुप्त (मिदनापुर) : अध्यक्ष महोदय, आज इस उच्च पद पर सर्वसम्मति से आपके निर्वाचन पर मुझे जो प्रसन्नता हो रही है उसे मैं व्यक्त नहीं कर सकता हूं। चूंकि पिछली बार आप थोड़ी अवधि के लिए इस पद पर सुशोभित रहे इसलिए मुझे आपको नजदीकी से जानने का अवसर प्राप्त हुआ था और हमने मिलकर संसदीय आचरण को प्रभावित करने वाले कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की थी और इस अवधि के दौरान स्वतंत्र निर्णय लेने वाले, निष्पक्ष और न्यायप्रिय व्यक्ति के रूप में मेरी नजरों में आपका सम्मान बढ़ा है।

मध्याह्न 12.00 बजे

इसलिए इस अध्यक्षपीठ पर आपका सुशोभित होना हमारे लिए अपार संतोष की बात है। महोदय यहां अनेक माननीय सदस्यों और नेताओं ने आपको सौंपे गए गुरूतर उत्तरदायित्वों के बारे में बोला है। विशेष रूप से इसलिए भी कि आपको सारा सभा ने निर्वाचित किया है। इसका तात्पर्य है कि इस सभा को चलाने की आपकी क्षमता में संपूर्ण सभा का विश्वास है, इसी प्रकार मेरा कहना है कि इस सभा के सदस्यों के कंधों पर एक बड़ी जिम्मेदारी आ गई है जिन्होंने सद्विवेक से आपको सर्वसम्मति से निर्वाचित करने का निर्णय किया और आप निर्वाचित हुए : और अब यह इस सभा में सभी दलों व सदस्यों पर निर्भर करता है कि वे आपके निर्देशों, आपकी टिप्पणियों का सम्मान करने का यथा संभव प्रयास करें और यह सुनिश्चित करें कि सभा का संचालन इस संसद की परम्पराओं के अनुरूप विधि से हो।

महोदय, मेरे विचार से आप भी इसे स्वीकार करेंगे कि हाल में इस सभा में गरिमा व शिष्टाचार बनाए रखना एक मुख्य समस्या बन गई थी। उसके लिए मैं किसी को दोष नहीं दे रहा हूं किंतु यह सत्य है, इस बारे में प्रेस में और विदेशों में भी प्रतिकूल टिप्पाणियां हुई हैं। इस सभा में गरिमा व शिष्टाचार की कथित कमी के बारे

[श्री इन्द्रजीत गुप्त]

में भी प्रतिकूल टिप्पणियां की गई हैं। महोदय अब आपके संरक्षण में मुझे आशा है कि वह अध्याय बंद हो जाएगा और हर कोई अच्छा आचरण करेगा। मै श्री मुलायम सिंह और अन्य नेताओं से सहमत हूं कि इसकी जिम्मेदारी निश्चित तौर पर विपक्ष व सरकार दोनों की है। कोई भी संसदीय लोकतंत्र तब तक फल-- फूल नहीं सकता जब तक उसमें कोई प्रभावी और जागरूक विपक्ष न हो। इसलिए, एक ओर जहां विपक्ष को अपने काम--काज में कुछ मानदण्ड और नियम अपनाने चाहिए वहीं सरकार को, चाहे कितने ही बड़े बहुमत वाली हो, विपक्ष के विचारों का आदर करना चाहिए क्योंकि यह उनका कर्तव्य है कि विपक्ष को विश्वास में लेने के लिए हर संभव उपाय करे और अपने नीतिगत मामलों पर निर्णय करते समय उनसे व्यापक रूप से परामर्श करे। मुझे आशा है कि वर्तमान प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जिनकी क्षमता पर मुझे पूर्ण विश्वास है, निश्चित रूप से इस बात का ध्यान रखेंगे कि नीतिगत निर्णय लेने से पहले उस पर यथा संभव सहमति कायम की जाए। अभी बहुत जटिल निर्णय लिए जाने हैं। इसके बारे में मुझे कोई संदेह नहीं है। इसलिए जहां तक मेरे दल का सम्बन्ध है, इस बार हमारी सदस्य संख्या में काफी कमी आई है। मुझे इस बात का खेद है परन्तु यह मतदाताओं का निर्णय है और हमें इसे मानना होगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि जहां तक हमारे सदस्यों का सम्बन्ध है हम यथा संभव आपका पूर्ण सहयोग करेंगे और हम पर कोई ऐसा आरोप नहीं लगा पाएगा कि हमारे ऐसा कुछ करने से इस संसद की मर्यादा, संसद की गरिमा आहत हुई है।

अन्य लोगों के साथ मैं भी यह आशा करता हूं कि आप नए सदस्यों को तथा पिछली बैंचों पर बैठने वाले सदस्यों को बोलने का अधिक मौका देंगे। उनकी हमेशा शिकायत रही है; उनको हमेशा शिकायत रहती है कि उन्हें बोलने का पर्याप्त मौका नहीं दिया जाता। कृपया आप उन्हें इस मामले में मदद करने की कोशिश करें।

दूसरे, महोदय मुझे इस बात का भी दुख है कि इस सदन में अपने कर्तव्य के परिपूर्ण कुशल निर्वहन के लिए सामयिक अध्यक्ष की प्रशंसा में किसी ने भी एक भी शब्द नहीं कहा है। फिर भी इससे मैं यह समझता हूं कि आम तौर पर इस सभा में जिस तरह से कार्यवाही का संचालन हुआ है, उसका अनुमोदन कर दिया है।

मैं आपको उस सहयोग के लिए भी धन्यवाद देता हूं जो हमें हर तरफ से मिला है तथा मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि भविष्य में आपको शिकायत का कोई मौका नहीं मिलेगा।

[हिन्दी]

श्री शरद पवार (बारामती) : मान्यवर, लोक सभा के अध्यक्ष पद पर आप विराजमान हो गये हैं, इसलिए आपका अभिनन्दन करने और आपको शुभकामनाएं देते हुए मुझे बड़ी खुशी होती है। आपका अभिनन्दन करने का मुझे दूसरी बार मौका मिल रहा है।

मान्यवर, पूरे देश की पार्लियामेंट्री इंस्टीट्यूशंस लोक सभा के बारे में एक अलग तरह से सोचती हैं। लोक सभा या लोक सभा का अध्यक्ष देश के सभी पार्लियामेंट्री इंस्टीट्यूशंस का नेतृत्व करता है। कई बार स्टेट्स की विधान सभाओं में कुछ सवाल ऐसे पैदा होते हैं तो हमेशा वहां बात होती है कि ऐसी परिस्थिति में लोक सभा ने किस तरह से निर्णय लिया था-- इसलिए आपका निर्णय या निर्देश न केवल लोक सभा के लिए फलदायी होता है, बल्कि पूरे देश के पार्लियामेंट्री इंस्टीट्यूशंस को एक नया रास्ता दिखाता है। इसलिए आपकी जिम्मेदारी बड़ी है और ऐसी जिम्मेदारी में हम सभी साथियों का फर्ज है कि आपको ठीक तरह से सहयोग दें, जिससे इस सदन की गरिमा बढ़ती रहे। मैं, मेरी पार्टी और मेरे साथी सभी कामों में आपको खुले दिल से सहयोग देंगे। 15 महीने पहले हम सभी साथियों ने आपका अभिनंदन किया था। आप तीन बार इस सदन के सदस्य चुने गये, दूसरी बार अध्यक्ष बन गये, हमारी सिर्फ इतनी भावना है कि अगली बार इतनी जल्दी अभिनंदन करने का हमें मौका न दें।

श्री रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली) : अध्यक्ष महोदय, दुनियां के सबसे बड़े लोकतंत्र, हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी पंचायत लोक सभा के अध्यक्ष पद पर दोबारा निर्विरोध ढंग से चुने जाने के बाद आपने इस पद को सुशोभित किया है, इससे देश गौरवान्वित है, सदन गौरवान्वित है। मैं अपनी पार्टी राष्ट्रीय जनता दल की ओर से आपको बधाई देता हूं। आपने पूर्व में निष्पक्षता और योग्यता के साथ सदन के संचालन का काम किया। पंडित जवाहर नेहरू ने कहा था कि लोक सभा अध्यक्ष के लिए कम से कम दो गुणों का होना आवश्यक है और वे गुण योग्यता और निष्पक्षता हैं। आपमें योग्यता भी है, निष्पक्षता भी है और अध्यक्ष महोदय, आपमें सहिष्णुता भी है। देश में जो गरीब, दलित, शोषित, लांछित, वांचित और उपेक्षित वर्ग के लोग हैं, आपके अध्यक्ष चुने जाने पर उनके हृदय में उत्साह का वातावरण हुआ है और आप उस मामले में संवेदनशील भी हैं। दलितों की समस्याओं के संबंध में जब हम लोग सवाल उठाते हैं तो आप संवेदनशीलता के साथ उन्हें सुनते हैं जिससे देश में जो करोड़ों गरीब लोग हैं, उनका मनोबल बढ़ता है, उनकी आकांक्षा बढ़ती है और उनका लोकतंत्र और लोकतंत्र की सबसे बड़ी संस्था संसद के प्रति विश्वास बढ़ता है।

अध्यक्ष महोदय, कभी--कभी लोक सभा के संचालन में कठिन घड़ी भी आती है, जिसमें सरकार अपनी संख्या बल के चलते हठधर्मिता करती है और केवल हठधर्मिता ही नहीं करती बल्कि उसमें कभी--कभी बुलडोजिंग करने की भी प्रवृति होती है। जिसके कारण जनता के हितों को देखते हुए विपक्ष को कभी--कभी एक्स्ट्रा कांस्टीट्यूशनल मैथड्स का भी सहारा लेना पड़ता है। उस समय अध्यक्ष महोदय, जब आप संकट की स्थिति में पड़ते हैं। तो आपके सामने संवैधानिक मर्यादा, लोकतंत्र की मर्यादा, संसद और लोक सभा की ऊंची गरिमा की रक्षा करने का दायित्व, साथ ही विपक्ष और तमाम हमारे नये माननीय सदस्यों के हितों की रक्षा की चिंता भी होती है जो जनता के बीच से चुनकर आते हैं। खासकर जब केवल 18 महीने और 13 महीने में बार--बार परीक्षा देकर हम लोग सदन में आते हैं तो जनता की आकांक्षा होती है कि हमारे बीच से गया हुआ आदमी यहां हमारे सवाल उठा सके। अभी डीजल की कीमत जिस तरह से बढ़ाई गई है, उसका मामला सदन में आने

वाला है। हम लोग गिनती से बंधे हुए थे, धोखाधड़ी के साथ, चुनाव खत्म होने के बाद सरकार ने जिस तरह डीजल के दाम बढ़ाने का काम किया है, उस पर सदन में सवाल उठेगा। उस तरफ से जो हठधर्मिता बढ़ती जा रही है और वे इस पर पुर्नविचार करने के लिए तैयार नहीं हैं तो हम विपक्षी भी एकजुट होकर इसका प्रतिकार करने के लिए तैयार हैं और आपके सामने वह संकट की घडी आयेगी और तब लोक सभा की गरिमा और मर्यादा की रक्षा करने का आपका दायित्व होगा। आज जनता के करोड़ों लोगों के बीच त्राहि–त्राहि मची हुई है कि मंहगाई बढ़ रही है। उस सवाल को हम छोड़ नहीं सकते और सरकार का जो राक्षसी बहुमत है, उससे हमें दबाया नहीं जा सकता।

अध्यक्ष महोदय, आप हमारे गार्जियन हैं, कस्टोडियन आफ दि हाउस हैं। लोकतंत्र के प्रबल रक्षक हैं। इसलिए इस दफा सदन में जो सवाल उठेगा उसे दबाया नहीं जा सकता। यह पद आपके लिए कांटों के ताज जैसा है। आपको पूर्व सदन का अनुभव रहा है। इस बार लोक सभा में अनेक विषय उठेंगे और उन पर सरकार कहेगी कि हम हाउस को कंसेंसस से चलाते हैं, लेकिन यदि यहां ऐसा नहीं होता और जबर्दस्ती तथा मनमानापन करके कार्यवाही चलाई गई, तो उसका संपूर्ण विपक्ष घोर प्रतिवाद करेगा और आपको हम लोगों को संरक्षण देने का काम करना होगा। आप हमारे गार्जियन हैं, खासकर के छोटी पार्टियों और नए सदस्यों के अधिकारों का आप संरक्षण करते रहें हैं उसी तरह से अब आपको रक्षा करनी होगी।

मुझे पूरा भरोसा और विश्वास है कि आप सदन की गरिमा और जिस समाज से आए हैं, उस की गरिमा और उनके हितों का संरक्षण करेंगे, लोक तंत्र की मर्यादा रखेंगे तथा लोक तंत्र को मजबूत करने का काम आपके निर्देशन में होगा। हम आपका नेतृत्व कबूल करते हैं और विश्वास दिलाते हैं कि आपको सदन को अच्छी तरह से चलाने में पूरा सहयोग देंगे और मुझे विश्वास है कि आप सावधानी के साथ सदन का संचालन करेंगे। गरीबों के हितों का संरक्षण हो, गरीबों के हितों पर कुठाराघात सरकार द्वारा न हो इसके लिए हम लोग प्रबल चौकीदार की तरह यहां पर मुस्तैद रहेंगे और आपके संरक्षण की अपेक्षा करेंगे। जिस तरह से पूर्व में सदन के संचालन में आपको सफलता मिली थी, उसी तरह मुझे विश्वास है कि आप 13वीं लोक सभा के संचालन में भी सफल रहेंगे और उसी तरह से ऊंचा आदर्श, ऊंची महिमा और उच्च गरिमा का अनुपालन करेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपका धन्यवाद करता हूं।

[अनुवाद]

श्री सनत कुमार मंडल (जयनगर) : अध्यक्ष महोदय, अपने दल रा. स. पा. की ओर से मैं अध्यक्ष के रूप में आपका चुनाव होने पर आपको हार्दिक बधाई देता हूँ।

महोदय, आप तेरहवीं लोक सभा के गठन के बारे में जानते हैं। इसमें कई छोटी–छोटी पार्टियां हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि आप उन्हें कई ज्वलंत समस्यओं पर बोलने के लिए अधिक समय देंगे। मुझे आशा है कि आप सदस्यों के अधिकारों और सदन की गरिमा की रक्षा करेंगे।

मैं एक बार फिर आपको सदन की कार्यवाही को सुव्यवस्थित और निष्पक्ष तरीके से चलाने में अपनी पार्टी का पूरा सहयोग देने का आश्वासन देता हूं तथा मैं आपके कार्यकाल की सफलता की कामना करता हूं।

श्री चन्द्र शेखर (बलिया) : अध्यक्ष जी, आप सदन के अध्यक्ष चुने गए हैं, इसके लिए आप मेरी ओर से अभिनंदन एवं शुभकामनाएं स्वीकार करें। सारे समाज में आज एक विहकलता है। लोग कठिनाई का सामना कर रहे हैं। उसका कुछ आभास हमारे पूर्व वक्ता श्री रघुवंश प्रसाद सिंह के भाषण से मिला। यह सवाल सदन में उठेगा और उस समय आपकी उतनी परीक्षा नहीं होगी जितनी सदन के सदस्यों की परीक्षा होगी।

मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि हर समय शुभकामना देते समय, आपका अभिनन्दन करते समय लोग उच्च विचारों और उच्च मान्यताओं को यहां पर प्रतिपादित करने का आश्वासन देते हैं।

लेकिन जब सदन चलता है तो एक पक्ष से नहीं चारों तरफ से ऐसी कठिनाइयां पैदा की जाती हैं कि जिसमें अध्यक्ष के लिए निर्णय लेना कठिन हो जाता है। हमारे मित्र श्री इन्द्रजीत गुप्त ने थोड़ा संकेत किया कि हम लोगों की बड़ी जिम्मेदारी है। मैं ऐसा समझता हूं कि आज हम जो आश्वासन आपको दे रहे हैं, उस आश्वासन के अनुकूल हम अपने को सिद्ध करेंगे। आपकी अपनी मर्यादा है।

अभी हम एक वक्ता का भाषण सुन रहे थे। सदन का अध्यक्ष या सदन को चलाने वाला ऐसा नहीं होता कि जो चाहें वैसा निर्णय ले ले। उसके लिए कुछ परम्परायें बनी हुई हैं, कुछ नियम, मान्यतायें बनी हुई हैं। फिर यदि सब लोग सहयोग न करें तो कितना भी सुयोग्य, कितना भी सहिष्णु कोई अध्यक्ष हो, वह सदन को चलाने में असमर्थ हो जाता है। पिछले सदन में एक बार नहीं अनेक बार ऐसी कठिनाई आई जिससे जैसा हमारे मित्र इन्द्रजीत जी ने कहा कि इस सदन की मर्यादा के बारे में चारों तरफ शंका की दृष्टि से देखा जाने लगा। मैं समझता हूं कि आने वाले दिन अधिक भयावह होंगे। इसके लिए कोई पार्टी जिम्मेदार नहीं है, सरकार जिम्मेदार नहीं है। दुनिया जिस तेजी से बदल रही है और हमारा यह भूखंड, हमारा उपमहाद्वीप जिन कठिनाइयों से गुजर रहा है, उन कठिनाइयों का असर हमारे ऊपर भी होगा–चाहे वह आर्थिक हो, राजनीतिक हों, सामाजिक या सांस्कृतिक हों। सारी कठिनाइयां एक साथ आ रही हैं। उनका उल्लेख इस सदन में होना अनिवार्य है। ऐसे समय में हम सबके लिए यह आवश्यक है कि हम एक दूसरे के विचारों को समझने की कोशिश करें। जो समस्यायें हैं, वे तो हैं ही, नयी समस्यायें अगर न खड़ी हों तो ज्यादा अच्छा है लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि नयी समस्यायें प्रारंभ से खड़ी करने के लिए कुछ ज्यादा उत्सुक जान पड़ते हैं और ऐसी बातें किसकी ओर से हो रही हैं, यह तो आने वाले दिन

[श्री चन्द्र शेखर]

बतायेंगे। लेकिन अगर ऐसी समस्यायें न खड़ी की जायें तो ज्यादा अच्छा होगा। मुझे विश्वास है कि पिछले साल कठिन समय में जिस तरह से आपने इस सदन का नेतृत्व किया है, आने वाले कठिन दिनों में भी आप सबके सहयोग से कठिनाइयों का समाधान निकाल सकेंगे और हम इस सदन की मर्यादा को पिछले दिनों के अनुभव से कुछ अधिक अक्षुण्ण रखने में और उत्कृष्ट बनाने में सफल होंगे। आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।

श्री जी. एम. बनातवाला (पोन्नानी) : जनाब स्पीकर साहब, आप स्पीकर मुनतासिब हुए हैं, मैं अपनी पार्टी मुस्लिम लीग और अपने जानिब से आपको दिली मुबारकबाद पेश करता हूं। आप पिछली लोकसभा में भी हमारे स्पीकर थे और बड़ी कामयाबी के साथ आपने अपनी जिम्मेदारियों को निभाया था। अब दोबारा आपका इंतिखाव होना और इत्तफाक–ए–राय के साथ इंतिखाब होना इस बात को जाहिर करता है कि इस ऐवान के हर सैक्शन की जानिब से आप पर पूरा ऐतमदाद है। आप सेक्यूलर जम्हूरियत के मुहाफिज हैं। इस ऐवान की अजमद और शान, उसके कवायिद व जवाबिद, उसकी रिवायात को बरकरार रखना है और मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि मेरी पार्टी का इस सिलसिले में आपके साथ मुकम्मल तावुन रहेगा। मैं एक बात पर जोर देना चाहूंगा कि यह ऐवान एक आजीम ऐवान है। इसलिए कि यह पूरी कौम की नुमाइंदगी करता है, पूरे समाज की नुमाइंदगी करता है। हमारी सोसायटी में पाये जाने वाले मुख्तलिफ नज़रियात की यहां पर नुमाइंदगी है।

साहेब, आप महसूस करेंगे और यह जरूरी है कि यह नुमाइंदगी इस ऐवान के बहस और मुबाहिसे में और इस ऐवान की डिबेट्स के अंदर भी जाहिर हो और इसके लिए जरूरी होगा कि इस ऐवान में पाई जाने वाली तमाम पार्टियां चाहे वह कितनी छोटी पार्टियां हों और कुछ जो आजाद हों, उन सबकी राय लोक सभा की डिबेट्स के अंदर शामिल रहे, इसकी गुजारिश मैं जरूर आपसे करूंगा और इस बात की उम्मीद रखूंगा कि इंशा अल्लाह हम सब मिलकर इस ऐवान की शान और अजमद को बरकरार रखेंगे।

हां, हमारे प्रो टैम स्पीकर साहब जरा थोड़े बेसब्र रहे। उनका नाम मैं, बहुत पहले ही अगर पुकारा जाता, ले लिया होता कि हम उनके बहुत मशकूर हैं, ममनून हैं, उनका शुक्रिया अदा करते हैं, उन्होंने हमको हलफ दिलाया, इस ऐवान में बैठने की इजाजत दी और आपका भी स्पीकर के तौर पर उन्होंने ऐलान किया, उसके लिए बहुत–बहुत शुक्रिया। जुग–जुग जीयो, यहां पर रहो, एक साल नहीं यहां पर रहो, टर्न पूरी करते हुए सबको हलफ दिलाते रहो, यह भी उम्मीद हम करेंगे।

साहब, सैकुलर जमहूरियत की हिफाज में आइए, हम सब हाथ मिलाकर आगे बढ़ें ताकि हमारे समाज के हर सैक्शन के साथ, हर हिस्से के साथ पूरा–पूरा इंसाफ हो सके–ऐसी एक जस्ट सोसाइटी, ऐसी एक इंसाफ पसंद सोसायटी के कयाम का हलफ लेते हुए मैं आपको यकीन दिलाना चाहता हूं कि आपको इस काम में हमारा हर मुमकिन तावुन हासिल रहेगा। जनाब, आपको मुबारक हो।

جناب جی۔ ایم۔ بنات والا (پونانی): جناب اسپیکر صاحب، آپ اسپیکر منتخب ہوئے ہیں، میں اپنی پارٹی مسلم لیگ اور اپنی جانب سے آپ کو دلی مبارکباد پیش کرتا ہوں۔ آپ پچھلی لوک سبھا میں بھی ہمارے اسپیکر تھے اور بڑی کامیابی کے ساتھ آپ نے اپنی ذمہ داریوں کو نبھایا تھا۔ اب دوبارہ آپ کا انتخاب ہونا اور اتفاق رائے کے ساتھ انتخاب ہونا اس بات کو ظاہر کرتا ہے کہ اس ایوان کے ہر سیکشن کی جانب سے آپ پر پورا اعتماد ہے۔ اپ سیکولر جمہوریت کے محافظ ہیں۔ اس ایوان کی عظمت اور شان، اس کے قوائد وضوابط، اس کی روایت کو برقرار رکھنا ہے اور میں آپ کو یقین دلاتا ہوں کہ میری پارٹی کا اس سلسلے میں آپ کے ساتھ مکمل تعاون رہے گا۔

میں ایک بات پر زور دینا چاہوں گا کہ یہ ایوان ایک عظیم ایوان ہے۔ اس لئے کہ یہ پوری قوم کی نمائندگی کرتا ہے، پورے سماج کی نمائندگی کرتا ہے۔ ہماری سوسائٹی میں پائے جانے والے مختلف نظریات کی یہاں پر نمائندگی ہے۔

صاحب، آپ محسوس کریں گے کہ یہ ضروری ہے کہ یہ نمائندگی اس ایوان کے بحث ومباحثہ میں اور اس ایوان کی ڈیبیٹ کے اندر بھی ظاہر ہو اور اس کے لیے ضروری ہوگا کہ اس ایوان میں پائی جانے والی تمام پارٹیاں چاہے وہ کتنی ہی چھوٹی پارٹیاں ہوں اور کچھ جو آزاد ہوں، ان سب کی رائے لوک سبھا کی ڈیبیٹ کے اندر شامل ہوں، اس کی گذارش میں ضرور آپ سے کروں گا اور اس بات کی اُمید رکھوں گا کہ انشااللہ ہم سب مل کر اس ایوان کی شان اور عظمت کو برقرار رکھیں گے۔ ہاں، ہمارے پروٹیم اسپیکر صاحب ذرا تھوڑے بے صبر رہے۔ ان کا نام میں، بہت پہلے ہی اگر پکارا جاتا، تو لے لیا ہوتا کہ ہم ان کے بہت مشکور ہیں، ممنون ہیں، ان کا شکریہ ادا کرتے ہیں۔ انھوں نے اعلان کیا، اس کے لیے بہت بہت شکریہ۔ جگ جگ جیو، یہاں پر، ٹرم پوری کرتے ہوئے سب کو حلف دلاتے رہو، یہ بھی اُمید ہم کریں گے۔

صاحب، سیکولر جمہوریت کے محافظ کی حفاظت میں آیئے، ہم سب ہاتھ ملا کر آگے بڑھیں تاکہ ہمارے سماج کے ہر سیکشن کے ساتھ، ہر حصے کے ساتھ پورا پورا انصاف ہوسکے۔ ایسی ایک جسٹ سوسائٹی، ایسی ایک انصاف پسند سوسائٹی کے قیام کا حلف لیتے ہوئے میں آپ کو یقین دلاتا ہوں کہ آپ کو اس کام میں ہمارا ہر ممکن تعاون حاصل رہے گا۔

جناب، آپ کو مبارک ہو۔

श्री अली मोहम्मद नाईक (अनंतनाग) : जनाबे स्पीकर साहब, मैं अपनी तरफ से, अपनी जमात जम्मू कश्मीर नैशनल कान्फ्रैंस और रियासत–ए–जम्मू कश्मीर के लोगों की तरफ से आपको दुनियां की बड़ी अजीम जमहूरियत के ऐवान के स्पीकर बनने पर मुबारकबाद पेश करता हूं। इस ऐवान में बड़ी–बडी पार्टियां बैठी हुई हैं, जिनके मेम्बरों की तादाद सौ से ज्यादा है और इस ऐवान में हिन्दुस्तान की जमहूरियत का यह खासा है कि यहां ऐसी भी पार्टियां बैठी हैं जिनकी मिमबरी तादाद दर्जन से नीचे है, दर्जन से ज्यादा नहीं है। मुझे उम्मीद है कि रियासत–ए–जम्मू कश्मीर जो तादाद के लिहाज से, आबादी के लिहाज से हिन्दुस्तान की छोटी रियासत हो सकती है लेकिन हमारे जो मसाइल हैं, चाहे वे पोलीटिकल हैं, इकोनौमिक हैं, डैवलपमेंट के मसाइल हैं, चाहें वे लोगों को आज सरे नौ बसाने के मसाइल हैं, मुझे यकीन है कि आप इस छोटी सी रियासत को, जिसके मसाइल बहुत बड़े हैं, इस ऐवान में उठाने का मौका फराहम करेंगे। मैं रियासत–ए–जम्मू कश्मीर की तरफ से इस ऐवान से गुजारिश करूंगा कि जम्मू कश्मीर के मसले को एक कौमी मसला समझकर, हमारे जो मसाइल हैं, उनमें सब पार्टियों का, चाहें वे बड़ी हैं, छोटी हैं, हल करने में हमको सहयोग मिलेगा।

जनाबेवाला, यहां यह जाहिर किया गया कि स्पीकर इस ऐवान के तकद्दुस को बरकरार और कायम रखें–यह ठीक बात है। लेकिन स्पीकर अकेला ऐसा नहीं कर सकता। जब तक विभिन्न दलों के नेताओं, चाहे छोटे दल हों या बड़े दल, का स्पीकर को कोआपरेशन हासिल नहीं होगा, तब तक इस ऐवान का जो तकद्दुस है, इस ऐवान का जो ऐहतराम है, उसे बरकरार रखने में उन्हें दिक्कत पेश आएगी। लिहाजा आप हमने इत्तफाक–ए–राय से आपको अपना स्पीकर चुना है। इससे हम पर यह जिम्मेदारी भी पड़ती है कि चाहे कौन सी पार्टी कहां बैठी है, उसके ख्यालात क्या हैं, उसकी सोच क्या है, लेकिन उसे स्पीकर को अपना ऐहतमाद देना है और ऐवान के अंदर एक डिस्पिलिन जो इसकी मर्यादा है, उसको कायम व दाइम रखना है। वह तभी होगा जब हम सब लोगों की तरफ से आपको मुकम्मल तावुन और सहयोग मिलेगा।

मैं अपनी पार्टी की तरफ से, अपने एम.पीज की तरफ से यकीन दिलाना चाहता हूं कि आपको हमारी तरफ से इस ऐवान का काम चलाने में पूरा सहयोग, पूरा साथ, पूरा तावुन मिलेगा। मुझे इस ऐवान से, आपकी वसावत से यह उम्मीद है कि हमारे जो मसाइल हैं, हमारी रियासत छोटी है, उनको पेश करने के लिए, उनका मदावा ढूंढने के लिए हमें सब लोगों का तावुन हासिल होगा। मैं एक बार फिर आपको बइत्तफाक–ए–राय स्पीकर चुने जाने पर मुबारकबाद देता हूं।

[अनुवाद]

श्री अमर राय प्रधान (कूच बिहार) : महोदय, आपको सर्वसम्मति से इस पवित्र सदन के माननीय अध्यक्ष के रूप में चुना गया है। इस अवसर पर मैं अपने दल, फोरवर्ड ब्लाक की ओर से आपको बधाई देता हूं। मैं आपको आश्वासन देता हूं कि आपको इस पवित्र सदन की गरिमा को कायम रखने में मेरी पार्टी का पूरा सहयोग मिलेगा।

आजकल, भारत में एक नयी राजनैतिक संस्कृति का विकास हुआ है अर्थात एक गठबंधन मंत्रिमण्डल बनाना और उसमें भागीदारी बनना। सत्तारूढ़ दल का विश्वास है कि एकमात्र विकल्प अब गठबंधन मंत्रिमण्डल ही रह गया है। कुछ लोग जो आज इसमें विश्वास नहीं करते, मुझे विश्वास है कि वे कल इस संस्कृति में विश्वास करेंगे। गठबंधन सरकार में बड़ी तथा छोटी दोनों ही पार्टियां होती हैं। हम छोटे दलों की उपेक्षा नहीं कर सकते। यद्यपि वे छोटे दल हैं फिर भी उनका काफी महत्व है। अगर आप दलों की सूची देखेंगे तो आप स्वतंत्रता के पिछले 52 वर्षों मे क्षेत्रीय असंतुलन के संकेत पाएंगे। आप यह भी पाएंगे कि उनमें राष्ट्रीय महत्वकांक्षा भी है।

अध्यक्ष महोदय, अपने दल की ओर से मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि इन छोटे–छोटे दलों और ग्रुपों का ध्यान रखें।

श्री पी. सी. थामस (मुवत्तुपुजा) : महोदय, आपको एक बार पुनः माननीय अध्यक्ष के पद पर सुशोभित होने पर केरल कांग्रेस (एम) की ओर से बधाई देता हूं।

महोदय, मुझे विश्वास है कि पिछली लोक सभा के अध्यक्ष के रूप में अपने अनुभव, एक जन सेवक तथा एक राजनैतिक व्यक्ति के रूप में अपने लम्बे अनुभव तथा पद दलितों के लिए लम्बे संघर्ष के अपने अनुभव से आप इस सदन में तथा इसके साथ हमारे राष्ट्र की विविधताओं के साथ न्याय कर पाने में कामयाब रहेंगे।

महोदय, इन सबके अलावा, मुझे आपमें एक अच्छा गुण यह दिखाई देता है कि आप एक सहृदय व्यक्ति हैं यह गुण हम में से कईयों में नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : आप भी एक सज्जन व्यक्ति हैं।

श्री पी. सी. थामस : महोदय, बहुत–बहुत धन्यवाद।

कर्नल न्यूमैन ने सज्जन व्यक्ति की परिभाषा इस प्रकार दी है, "एक ऐसा व्यक्ति जो दूसरों को दुख नहीं पहुंचाता।" मैं नहीं जानता कि आप उस सीमा तक पहुंचेंगे या नहीं क्योंकि आपको अपने पद पर रहते हुए कई बार कठोर होना पड़ेगा।

हमने यह भी देखा है कि श्री मुलायम सिंह यादव जैसे कुछ वरिष्ठ नेता यह कहकर अग्रिम जमानत ली है कि उन्हें राह से कुछ हटना पड़ सकता है। मुझे विश्वास है कि अपने अनुभव के साथ आप इस सदन पर नियंत्रण रख सकेंगे।

मुझे याद है कि दो वर्ष पहले हमने सदन में मर्यादा बनाए रखने के संबंध में लगभग छह दिन तक दिन और रात लम्बी बहस की थी। हम एक साथ मिले और सर्वसम्मति से एक निर्णय पर पहुंचे कि हम नीति और सदाचार का पालन करेंगे तथा विधि सम्मत कार्य करेंगे। मुझे दुख है कि हम इस प्रयास में सफल नहीं

[श्री पी. सी. थामस]

रहे हैं इसलिए, हम सभी जानते हैं कि इस संबंध में यह केवल आपका ही प्रयास अपरिहार्य नहीं है बल्कि यह हम सभी का प्रयास होना चाहिए। महोदय, हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हम सभी इस सदन की महान परम्परा को बनाए रखने में दलगत राजनीति से ऊपर उठने की कोशिश करेंगे।

महोदय, जैसा कि अनेक वरिष्ठ साथी पहले ही कह चुके हैं, पीछे बैठे लोगों का ध्यान रखा जाएगा। यह बात अनेक भाषणों में कही गई है लेकिन उन सभी सदस्यों द्वारा इसका पालन नहीं किया गया है। जितना अधिक समय वह लेंगे उतना ही कम समय पीछे बैठे लोगों को मिलेगा। मुझे विश्वास है कि लोकतंत्र का संरक्षक होने के नाते आप पीछे बैठे लोगों का ध्यान रखेंगे और इस सभा में छोटे–छोटे दलों को भी बोलने का अवसर प्रदान करेंगे। मुझे विश्वास है कि अपनी सहन–शक्ति और अनुभव के साथ आप इस सभा के सभी गुटों को इस देश के निर्धन ग्रामीण–वासियों, दलितों, अनुसूचित जातियों, महिलाओं और विद्यार्थियों और विशेषकर कृषकों के बारे में बोलने के भरपूर अवसर प्रदान करेंगे जो कि अनेक समस्याओं का सामना कर रहे हैं। भारत सरकार ने यह पहले ही कहा है कि वह उन पर पूरा ध्यान देंगे। लेकिन इस देश में, विशेष रूप से आपके राज्य में निर्धन कृषकों ने कपास की कीमतें कम होने के कारण आत्महत्या कर ली है।

उदाहरण के लिए मेरे राज्य में रबड़ पाया है। जो कृषक रबड़ का उत्पादन कर रहे हैं वह निराश हैं। श्री रघुवंष प्रसाद सिंह आप इस बात का समर्थन कर रहे थे। हम नारियल का उत्पादन करने वाले कृषकों और अन्य कृषकों की व्यथा के संबंध में इस सभा को बताना चाहेंगे। हम सत्ता–पक्ष द्वारा भी उपयुक्त प्रतिक्रिया जाहिर किए जाने की उम्मीद करेंगे। प्रधानमंत्री सहित अनेक सदस्य और सत्ता–पक्ष के अन्य नेता यह जानते हैं कि यदि उस तरफ से कोई उत्तर नहीं आता है तो सदस्य को काफी निराशा होती है। अतः पहली बात हम चाहेंगे कि जो समस्याएं हम सभा के समक्ष प्रस्तुत करें, उस संबंध में कुछ प्रतिक्रया ज़ाहिर की जाए।

मैं एक बार फिर अपने दल और केरल के लोगों की ओर से आपको मुबारकबाद देता हूं।

अध्यक्ष महोदय : अन्तिम वक्ता श्री फ्रांसिस जार्ज हैं।

श्री के. फ्रांसिस जार्ज (इडुक्की) : महोदय, केरल कांग्रेस दल की ओर से मैं इस सभा के सभी सदस्यों के साथ आपको इस तेरहवीं लोक सभा की अध्यक्षता संभालने पर बधाई देता हूं।

आपको सर्वसम्मति से चुना गया है और मैं उम्मीद करता हूं कि यह एक बहुत अच्छा संकेत है क्योंकि इस सभा को अनेक ऐसे मुद्दों पर जिनका यह सारा देश सामना कर रहा है सर्वसम्मति से विचार करना पड़ेगा। चूंकि आने वाला समय राष्ट्र के लिए कठिन है। महोदय हमें, हमारे पड़ोसी देश से लगभग युद्ध का समाना करना पड़ा है। और हमारे सामने अनेक समस्याएं आई हैं। जिनका *सदस्यों ने उल्लेख किया है।*

माननीय प्रधान मंत्री जी ने इस सभा की अच्छी परम्पराओं का उल्लेख किया है। मैं यह कहना चाहूंगा कि इस देश की भी बहुत सी अच्छी परम्पराएं रही हैं जैसे सहन–शक्ति की परम्परा, अल्पसंख्यकों के संरक्षण की परम्परा, धर्म–निरपेक्षता की परम्परा, जिसके बारे में मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि विभिन्न वर्गों द्वारा उसका आए दिन उल्लंघन किया जाता है जो कि देश भक्त होने का दावा करते हैं और जो कि कई तरह से इस बात का दावा करते हैं कि वह देश और जनता के लिए बोल रहे हैं। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के 50 वर्ष बाद भी इस देश में इस तरह की घटनाएं हो रही हैं।

हमें अनेक मुद्दों पर विचार करना होगा, जिनमें आर्थिक नीतियां भी हैं जिनका पालन केन्द्र–सरकार कर रही है और जिसका प्रतिकूल प्रभाव राज्यों पर विशेष कर केरल राज्य पर पड़ रहा है, पर विचार करना है। सरकार की नीतियों, सरकार की सार्वभौमिकीकरण और उदारीकरण की नीतियों, भूतपूर्व सरकारों की निर्यात तथा आयात नीतियों से हमारे केरल राज्य की अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ा है। कृषि उत्पादों नकदी फसलों के मुक्त आयात की नीति का हमारे राज्य के कृषि क्षेत्र पर गंभीर प्रभाव पड़ा है।

हमें उन नीतियों पर और अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर विचार करना होगा। हमें केन्द–राज्य संबंधों में व्यापक सुधार पर भी विचार करना होगा। तेरहवीं लोक सभा में इन सभी मुद्दों पर सर्वसम्मति से विचार करना होगा।

महोदय मुझे विश्वास है कि आप जन–जीवन के अपने लम्बे अनुभव और इस सभा में अध्यक्ष के रूप में अपने पिछले तेरह महीने के अनुभव के साथ सभी का सम्मान करते हुए सर्वसम्मति से इन सभी मुद्दों पर चर्चा करने के लिए इस तेरहवीं लोक सभा को नेतृत्व प्रदान कर सकेंगे और उपयुक्त निर्णय ले सकेंगे जो कि पूरे राष्ट्र और इस महान् देश के सभी राज्यों के लिए सहायक सिद्ध होंगे।

महोदय मैं पुनः आपको बधाई देता हूं। मैं तेरहवीं लोक सभा में अध्यक्ष के रूप में आपकी सफलता की कामना करता हूं और आपके लिए भगवान से प्रार्थना करता हूं।

[हिन्दी]

श्री रामदास आठवले (पंढरपुर) : अध्यक्ष जी, आप मुझे भी मौका दीजिए।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आज नहीं, बाद में। आपको आज मौका नहीं मिलेगा।

माननीय सदस्यों, मैं व्यक्तिगत रूप से तथा पूरे सदन की ओर से तेरहवीं लोक सभा के लिए आपके निर्वाचित होने पर आप

सभी को बधाई देता हूं। माननीय प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी और विपक्ष की नेता श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा अध्यक्ष पद के लिए मेरे नाम का क्रमशः प्रस्ताव करने एवं अनुमोदन करने के लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं। अध्यक्ष पद के लिए सर्वसम्मति से मेरे चुनाव के लिए मैं सभी दलों एवं समूहों के नेताओं के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद का चुनाव किए जाने से ऐसा लगता है कि इस सभा के सौहार्दपूर्ण और सुचारु कार्य संचालन को सुनिश्चित करने की दिशा में यह एक कदम है। मैं इस सभा के वरिष्ठतम सदस्य श्री इन्द्रजीत गुप्त को पिछले दो दिनों से सामायिक अध्यक्ष के रूप में सभा के गरिमापूर्ण संचालन के लिए विशेष रूप से धन्यवाद देता हूं।

तेरहवें आम चुनाव हमारे सामने हैं। यह निष्पक्ष होने के साथ–साथ सामान्यतः शान्तिपूर्वक रहे हैं। हमने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि हमारी विचारधारा लोकतांत्रिक है और हमारे देश में लोकतंत्र स्थायी प्रकृति का है। इसमें कोई शंका नहीं है कि हम एक असामान्य लम्बी अवधि के चुनाव प्रचार से गुजरे हैं। जिसमें मुझे विश्वास है कि हम सब, और हमसे अधिक हमारे देश के लोग थक गए हैं। आइए हम निष्पक्ष भाव से यह कामना करें कि यह सभा अपना कार्यकाल पूरा करे। हालांकि लोकतंत्र हमारे लोगों के जहन में है लेकिन वह राजनीतिक स्थिरता भी चाहते हैं।

चुनाव में संघीय शक्तियों को भारी जनादेश प्राप्त हुआ है। यह सरकार के ढांचे में इस सभा के गठन के रूप में परिलक्षित होता है। मैं मानता हूं कि एक अरब की आबादी वाले हमारे देश में जहां क्षेत्रीय पहचान सशक्त हुई है संघीय शक्ति के लिए इस उदार बहुमत का हम स्वागत करते हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि इस बहुमत से हमें भारत संघ को सुदृढ़ बनाने का एक स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है जिसे प्रतिस्पर्धी एवं परस्पर विरोधी क्षेत्रीय हितों के बीच सद्भाव और समन्वय बनाकर तथा इन सभी हितों को एक साथ मिलाकर सर्वश्रेष्ठ सहमति का मार्ग तैयार कर सकते हैं।

चुनाव ने हमें मुख्य रूप से यह संदेश दिया है कि लोग केवल विकास के दृष्टिकोण को ही समझते हैं। उसी का गुणगान करते हैं। हमारी जनता यह चाहती है कि राष्ट्र के कार्यक्रम में गरीबी को दूर करने, क्षेत्रीय असंतुलन को समाप्त करने और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने जैसे विषयों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। मैं आशा करता हूं कि यह संदेश माननीय सदस्यों को सभा में अपने कर्तव्यों और कार्यों के निर्वहन हेतु सूचना प्रदान करेगा और उनका मार्ग निर्देशन करेगा।

मुझे यह सूचित किया गया है कि सभा के सदस्यों में से 40 प्रतिशत सदस्य पहली बार निर्वाचित हुए हैं। यह आवश्यक है कि वे सभा की प्रक्रिया और कार्य संचालन नियमों से अवगत हो और उनका अनुसरण करें। यदि ऐसा नहीं होता है तो सभा में समय का सदुपयोग करना हम सबके लिए अत्यधिक कठिन कार्य होगा। वरिष्ठ सांसदों से नवनिर्वाचित सांसद सीख सकते हैं और वरिष्ठ सांसद नव निर्वाचित सांसदों का मार्ग दर्शन कर सकते हैं। नवनिर्वाचित सांसदों को शिक्षित करने में संसदीय दल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बारहवीं लोक सभा के दौरान, मुझे यह अनुभव हुआ कि नये सदस्य विशेष रूप से जो युवा सदस्य हैं, राजनैतिक दलीय भावना से परे यह महसूस करते हैं कि उन्हें अपनी बात कहने का पर्याप्त मौका नहीं मिल पाता है। सभा में राजनीतिक दलों के लिए समय का निर्धारण करना दलों की ही जिम्मेदारी है। संसदीय दलों को इस समस्या का समाधान खोजने का प्रयास करना चाहिए।

पूरे विपक्ष में राजनेता विधायी संस्थाओं में महिलाओं की पर्याप्त भागीदारी में कमी पर चर्चा कर रहे हैं। जहां तक चर्चा का संबंध है इस मुद्दे पर हमारा देश भी पीछे नहीं है। इस सभा में भी महिलाओं के पर्याप्त प्रतिनिधित्व की कमी है। उनकी संख्या 46 है और सभा के कुल सदस्यों की संख्या का वे 8.6 प्रतिशत भाग हैं। मैं आशा करता हूं कि महिला सदस्यों की सीमित संख्या होने के बावजूद वे अपने कार्यों से अपने प्रतिनिधित्व की कमी की भरपाई करेंगी। यह भी संसदीय दलों के द्वारा अपनी महिला सदस्यों को प्रोत्साहित करने में दिखाए जाने वाली सक्रिय रुचि पर निर्भर करता है।

संसदीय लोकतंत्र में यह परंपरा रही है कि सत्ता पक्ष को विपक्ष की आलोचनाओं के प्रति सहिष्णु होना चाहिए और विपक्ष को सरकार को जवाबदेह ठहराने में रचनात्मक एवं दायित्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। इस परम्परा के अविवेकपूर्ण उल्लंघन से सभा की गरिमा और प्रतिष्ठा आहत होती है। मैं सत्ता पक्ष तथा विपक्ष का आह्वान करता हूं। कि वे पारस्परिक सौहार्द एवं सर्वानुमति से मुझे इस सभा के संचालन में सहयोग दें विशेषकर ऐसी स्थिति में जबकि सभा में निर्दलीय सदस्यों के अलावा अन्य 38 राजनीतिक दलों के सदस्य हैं।

माननीय सदस्यों, वर्तमान समय में प्रचार तंत्र के विस्तार के कारण पूरे विश्व के विधानमंडलों पर सबकी निगाहें टिकी होती हैं। विशेष रूप से इलेक्ट्रानिक प्रचार तंत्र के विकास और सभा की कार्यवाही के सीधे प्रसारण के कारण आपकी प्रत्येक गतिविधि पर लोगों का ध्यान लगा रहता है। इसलिए आप में आत्म संयम होना चाहिए। लोग सही क्या है और गलत क्या है इस मामले का निर्णय करने में बहुत बुद्धिमान हैं। संसद दीर्घा में गहमागहमी करने, हो–हल्ला मचाने से कोई लाभ नहीं होगा। अच्छे आचरण के लिए ही हम पर नजर रहती है।

प्रचार तंत्र लोकतंत्र का महत्वपूर्ण स्तम्भ है। यह जनता से संपर्क करने का प्रभावी माध्यम है। मुझे विश्वास है कि वे सभा की कार्यवाही को प्रदर्शित करने में अपने दायित्व का निर्वहन पूरी उत्तरदायिता के साथ करेंगे।

पीठासीन अधिकारी का यह भौतिक दायित्व है कि वह संविधान की सर्वोच्चता को निष्पक्षतापूर्वक बनाए रखें। तद्नुसार मैं अपने कर्त्तव्य का पालन करूंगा। इस प्रयास में, मैं सभी सदस्यों के विवेक, सहयोग एवं समर्थन की आशा करता हूं।

आज सभा में मुझे दी गई बधाइयों के लिए मैं सभी का आभारी हूं।

मैं हृदयपूर्वक सभी को धन्यवाद देता हूं।

अपराह्न 12.46 बजे

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण–जारी

अध्यक्ष महोदय : महासचिव उन सदस्यों का नाम पुकारेंगे जिन्होंने अभी शपथ नहीं ली है या प्रतिज्ञान नहीं किया है।

श्री एम. वी. चन्द्रशेखर मूर्ति (कनकपुरा)

अपराह्न 12.47 बजे

मंत्रियों का परिचय

[अनुवाद]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, आपकी अनुमति से मैं मंत्रिपरिषद के सदस्यों का परिचय आपसे तथा आपके माध्यम से इस प्रतिष्ठित सभा से कराना चाहता हूं:

श्री लाल कृष्ण आडवाणी	–	गृह मंत्री
श्री अनन्त कुमार	–	संस्कृति, युवक कार्यक्रम और खेल मंत्री
श्री टी. आर. बालू	–	पर्यावरण और वन मंत्री
कुमारी ममता बैनर्जी	–	रेल मंत्री
श्री जार्ज फर्नान्डीज	–	रक्षा मंत्री
श्री जगमोहन	–	शहरी विकास मंत्री
डा. सत्यनारायण जटिया	–	शहरी रोजगार और गरीबी उपशमन मंत्री
श्री रामजेठ मलानी	–	विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्री
श्री मनोहर जोशी	–	भारी उद्योग और लोक उद्यम मंत्री
डा. मुरली मनोहर जोशी	–	मानव संसाधन विकास मंत्री तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री
श्री पी. आर. कुमारमंगलम	–	विद्युत मंत्री
श्री प्रमोद महाजन	–	संसदीय कार्य तथा जल संसाधन मंत्री
श्री मुरासोली मारन	–	वाणिज्य और उद्योग मंत्री
श्री राम नाईक	–	पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री
श्री नीतीश कुमार	–	जल–भूतल परिवहन मंत्री
श्री जुआल उराम	–	जनजातीय कार्य मंत्री
श्री राम विलास पासवान	–	संचार मंत्री
श्री नवीन पटनायक	–	खान और खनिज मंत्री
श्री सुन्दर लाल पटवा	–	ग्रामीण विकास मंत्री
श्री सुरेश प्रभु	–	रसायन और उर्वरक मंत्री
श्री काशीराम राणा	–	वस्त्र मंत्री
श्री शान्ता कुमार	–	उपभोक्ता मामले और सार्वजनिक वितरण मंत्री
श्री जसवंत सिंह	–	विदेश मंत्री
श्री यशवंत सिन्हा	–	वित्त मंत्री
श्री शरद यादव	–	नागर विमानन मंत्री

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

श्रीमती मेनका गांधी	–	सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय की राज्य मंत्री
श्री अरूण जेटली	–	सूचना और प्रसारण मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री एम. कन्नप्पन	–	अपारम्परिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय के राज्य मंत्री
श्री दिलीप राय	–	इस्पात मंत्रालय के राज्य मंत्री इसके लिए वे संसदीय कार्य मंत्री को भी सहयोग प्रदान करेंगे।
श्रीमती वसुन्धरा राजे	–	लघु उद्योग, कृषि और ग्रामीण उद्योग मंत्रालय की राज्य मंत्री तथा कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष विभागों में राज्य मंत्री
श्री एन. टी. षणमुगम	–	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के राज्य मंत्री
कुमारी उमा भारती	–	पर्यटन मंत्रालय की राज्य मंत्री

अध्यक्ष महोदय : अब सभा सोमवार, 25 अक्तूबर, 1999 को राष्ट्रपति के अभिभाषण के आधे घण्टे पश्चात पुनः समवेत होने के लिए स्थगित होती है।

अपराह्न 12.52 बजे

तत्पश्चात लोक सभा सोमवार, 25 अक्तूबर, 1999/3 कार्तिक, 1921 (शक) को राष्ट्रपति के अभिभाषण के आधे घंटे पश्चात् तक के लिए स्थगित हुई।

पी० एल० एस० — 48/1/3/99 (एन०)
280

© 1999 प्रतिलिप्यधिकार लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियम (नौवां संस्करण) के नियम 379 और 382 के अंतर्गत
प्रकाशित और सनलाईट प्रिन्टर्स, दिल्ली–110006 द्वारा मुद्रित।